अंतर्राष्ट्रीयतावादी संप्रदाय

भारत में अनेक विद्वानों का एक ऐसा वर्ग भी है जो मानता है कि हमें अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेना चाहिए। गंगा प्रसाद मुखर्जी और सी॰ राज गोपालाचारी ने भी इसी मत का समर्थन किया था। उनका मानना था कि जिस प्रकार हिन्दी-अंग्रेजी मिश्रित रूप में बोली जाती हैं उसी प्रकार इसका मिश्रित रूप स्वीकार कर उसे मानक रूप दिया जाना चाहिए। जिसके कारण देश के अनेक विद्वानों ने इन्हें शब्द ग्रहणवादी तथा स्वीकारवादी कहकर पुकारा है। इस वर्ग के विद्वानों का विचार था कि अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को ज्यों की त्यों स्वीकार कर लेने से निम्नलिखित लाभ होंगे —

(i) यह यूरोप के केवल दो या तीन देशों में सामान्य या समान रूप से प्रचलित शब्दावली है।

(ii) हम अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली से जुड़े रहेंगे।

(iii) अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली को न मानने से देश का वैज्ञानिक यथाशीघ्र हो सकने वाला विकास नहीं कर पाएगे।

(iv) हमें शब्द निर्माण के लिए प्राचीन साहित्य से शब्द खोजने का व्यर्थ परिश्रम नहीं करना पड़ेगा।

(v) अतिरिक्त पैसा और समय बच सकेगा।

Scanned with CamScanner

दूसरी ओर अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली के विरोध में विभिन्न विद्वानों के मत इस प्रकार हैं—

(i) अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली विश्व के सभी देशों ने मिल कर निर्मित नहीं की है।

(ii) अंग्रेजी के सभी के सभी शब्द हमारी पारिभाषिक शब्दावली के अंग नहीं बन सकते क्योंकि संसार की कोई भी समृद्ध भाषा इसे स्वीकार नहीं कर सकती।

(iii) विदेशी भाषा के व्याकरण से हम अपनी भाषा को विकृत नहीं कर सकते।

(iv) विदेशी भाषा के व्याकरण तथा पारिभाषिक शब्दों से न तो हमारी भाषा का संस्कार हो सकता है और न ही वह समृद्ध हो सकती है।

(v) सुधार लिए जाने वाली अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली में नए-नए शब्द बनाने की अतिरिक्त क्षमता नहीं है अत: अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के नाम पर अप्रचलित विदेशी शब्दों को ग्रहण नहीं किया जा सकता।

यद्यपि अंतर्राष्ट्रीय विचारधारा का प्रचार-प्रसार हुआ, परन्तु इस मत को ग्रहण करने वाले बहुत कम लोग थे। कारण यह है कि कोई भी भाषा-भाषी अपनी भाषा पर विदेशीकरण को स्वीकार नहीं कर सकता। दूसरा हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषाओं की प्रकृति अलग-अलग है। यदि हम अपनी हिन्दी भाषा में तकनीकी शब्दावली का स्वयं निर्माण करके उसका उपयोग करते हैं तो हमारी अपनी भाषा समृद्ध होगी। अत: अंतर्राष्ट्रीयतावादी सिद्धान्त हिन्दी भाषी लोगों की प्रकृति के स्वत: प्रतिकूल है।

Scanned with CamScanner